Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

# "आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था एवं कैशलेस (नकद रहित) प्रणाली का अध्ययन" (बिलासपुर छ0ग0 के संदर्भ में)

**निर्देशिका**

**डॉ. प्रतिमा बैस**
विभागाध्यक्ष (अर्थषास्त्र)
डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर (छ0ग0)

**शोधार्थी**

**कामिनी सिंह**
एम. फिल. (अर्थषास्त्र)
डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर (छ0ग0)

**सारांश** :–

*भारतीय अर्थव्यवस्था प्रगतिशील अर्थव्यवस्था है, जो निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। जहाँ प्राचीन समय में मनुष्यों की सीमित आवश्यकता थी परन्तु, जैसे–जैसे आवश्यकता में वृद्धि हुई तब* ***वस्तु विनिमय*** *प्रणाली का जन्म हुआ, फिर इसकी कठिनाइयों के कारण मुद्रा का अविष्कार हुआ, जिसने* ***मौद्रिक*** *प्रणाली को जन्म दिया। मुद्रा के कारण अनेक सामाजिक बुराईयों ने जन्म लिया जैस– चोरियां, ड़कैती, कालाधन, जिसको दूर करने के लिए कैशलेस प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा हैं।* ***हमारे माननीय प्रधानमंत्री "श्री नरेन्द्र मोदी"*** *द्वारा, जहाँ सभी प्रकार के भुगतान तकनिकी द्वारा होगें और इससे लोगो को कई सारे लाभ भी हैं, चोरी का डर नहीं, कालेधन, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण और समय की बचत इस प्रकार कई लाभ हैं। परन्तु हर सिक्के के दो पहलु होते हैं जहां एक ओर लाभ हैं वही दूसरी ओर कई सारी हानियां भी हैं। जैसे अशिक्षित आबादी, साइबर सुरक्षा का न होना, तकनीकी पर निर्भरता ऐसी आधारभूत समस्याएँ हैं भारतीय अर्थव्यवस्था की जिसको नकारा नहीं जा सकता हैं। ऐसी स्थिति में यहाँ की जनता इसे पूरी तरह नहीं अपना पाएगी, इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरी तरह नकद रहित समाज में तब्दील नहीं किया जा सकता।*

"कैश हुआ पुराना ऑनलाईन का हैं जमाना"

स्त्रोत :– **Dr. Shakya current Affairs.**

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

**प्रस्तावना** :–

भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था हैं जो अर्द्धविकसित अर्थव्यवस्था की अवस्था से निकल कर विकसित अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की ओर बढ़ रही हैं।[1]

प्राचीन भारत में मनुष्यों की आवश्यकताएँ सीमित थी और वह स्वावलंबी था। परन्तु सामाजिक प्रगति के साथ–साथ मनुष्यों की आवश्यकताओं में भी वृद्धि हुई और उनकी पूर्ति स्वनिर्मित वस्तुओं से करना कठिन हो गया, तब वे अपनी बनाई हुई अतिरिक्त वस्तुओं को दूसरों के द्वारा बनाई हुई वस्तुओं से बदलकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगा। जैसे जिस व्यक्ति के पास चावल था, वह अपना अतिरिक्त चावल देकर दूसरे व्यक्ति से गेहूँ और तीसरे व्यक्ति से दाल आदि सामग्री खरीदने लगा। इसी प्रारंभिक अदल–बदल की किया को वस्तु विनीमय कहते हैं। जिससे वस्तु विनिमय प्रणाली का उदय हुआ।

वस्तु विनिमय प्रणाली में हम कोई भी वस्तु के बदले दूसरी वस्तु प्राप्त कर सकते हैं। अतः वस्तु विनिमय प्रणाली में समाज की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की संतुष्टि की।[2] फिर समाज की जटिलता एवं परिवर्तनशीलता के साथ यह अनुभव किया जाने लगा कि वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तु का मूल्य निर्धारण बहुत कठिन था, कई उत्पाद जिन्हें विभाजित नहीं किया जा सकता। तब वस्तु विनिमय में होने वाली कठिनाई को दूर करने के लिए मुद्रा का अविष्कार हुआ। जिससे सभी वस्तुओं का मूल्य मुद्रा में निर्धारित होता हैं। अतः हम कोई भी वस्तु को उसका मौद्रीक मूल्य चुका कर उसको प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु जैसे–जैसे समाज के विकास का क्रम बढ़ता गया। हमारी पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था जब आधुनिकता की ओर बढ़ने लगी, तब हमारी इस आधुनिक अर्थव्यवस्था में अनेक सामाजिक बुराईयों ने जन्म लिया। जैसे कालाधन, भ्रष्टाचार, चोरी, लुटपाट, ड़कैती, आतंकवादी संगठन को वित्त पोषण। चोरियों के बढ़ने से लोग अपने पास नकदी रखने में असुरक्षित महसूस करने लगे, घूसखोरी को बढ़ावा मिला। जिससे और भी अनेक सामाजिक बुराईयाँ बढ़ने लगी।

समाज की अधिक बुराईयाँ मुद्रा से ही पनपती हैं। अतः इन सभी बुराईयों से छुटकारा पाने हमारे **''माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी''** जी ने कैशलेस (नकद रहित) अर्थव्यवस्था का सपना देखा और आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था में इसकी पहल भी हो गयी हैं।

''कैशलेस (नकद रहित) अर्थव्यवस्था जिसका सीधा तात्पर्य है तकनीकी सहायता से प्रत्येक लेने देन करना। जिसमें नकद के आदान–प्रदान की कोई आवश्यकता नहीं। वर्तमान समय में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जिसमें डिजिटल क्रांति ने दस्तक न दी हो।

एक नकद अर्थव्यवस्था का विचार असल में कागजी मुद्रा से डिजिटल मुद्रा की ओर बढ़ने की एक क्रांति हैं। जो अर्थव्यवस्था में काले धन के प्रवाह को रोकने तथा नकदी के प्रवाह में पारदर्शिता बढ़ाने के उद्देश्य से

[1] Economics-Dr.j.c.pant , dr.s.c.jain(sahitya bhawan publication ) structure of the Indian economy page no.32
[2] International trade and finance (dr.v.c.sinha, dr.pushpa sinha, vivek sinha ) page no.8

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

अपनायी जा रही हैं।[3] डिजिटल लेने–देन का लाभ यह भी होगा कि इसमें समय और ऊर्जा की बचत होगी। **''कैशलेस ट्रांजेक्शन''** से सभी कार्य घर बैठे कर सकते हैं। बैंको में पहले लंबी कतार में खड़ा होना पड़ता था, पर अब आपको बैंक भी जाने की आवश्यकता नहीं। चाहे आपको कोई भी बिल का भुगतान करना हो या सब्जियाँ खरीदना हो, दैनिक जीवन से जुड़े सभी तरह के लेन–देन कार्ड या डिजिटल माध्यमों द्वारा किए जाते हैं। जिसमें सभी प्रकार के लेन–देन का पता लगाया जा सकता हैं। जिससे लोगों के पास उपलब्ध सफेद धन बैंको में रहेगा और सरकार को उसकी जानकारी भी रहेगी। इस प्रकार यह रकम तन्त्र में वापस आ जाएगी और आवश्यकतानुसार कल्याणकारी कार्यो में व्यय की जा सकेगी।[4] भ्रष्टाचार में कमी होगी, लोगों को नकद रखने के ड़र से चोरी का भय नहीं रहेगा।

इस प्रकार नकद रहित अर्थव्यवस्था का विचार बहुत अधिक आकर्षण हैं, जो स्वप्न की तरह प्रतीत हो रहा हैं, और हकीकत होने जा रहा हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को इससे लाभ प्राप्त होते दिखाई दे रहा, परन्तु हम स्वप्न की उड़ान से नीचे उतर कर वास्तविक स्थिति को देखे तो एक प्रश्न हमारे सामने खड़ा होता हैं। कि क्या आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था में कैशलेस प्रणाली लाभदायक सिद्ध होगी। क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था की अपनी ही आधारभूत समस्याएँ हैं। जिसको नकारा नहीं जा सकता। और तकनीकी क्रांति ने भी कई समस्याएँ को जन्म दिया तो क्या ऐसी स्थिति में कैशलेस अर्थव्यवस्था का सपना साकार होगा या नही? इस बात का अध्ययन किया जाएगा।

## उद्देश्य :–

**प्रस्तावित शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है :–**

- भारतीय अर्थव्यवस्था में कैशलेस प्रणाली के महत्व का अध्ययन करना।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में कैशलेस प्रणाली के प्रभाव का अध्ययन करना।

## कैशलेस प्रणाली :–

**कैशलेस** लेनदेनो का मतलब ऐसे लेनदेनो से होता है जहां पर किसी वस्तु या सेवा को खरीदने के लिए नगद भुगतान के रूप में न करके ऑनलाइन तरीकों से करते हैं।[5]

**प्रधानमंत्री ''श्री नरेन्द्र मोदी''** ने देश से काले धन की समस्या को खत्म करने के लिए **1000 और 500** के नोट को बंद कर दिया, जिसके कारण लोगों को काफी परेशानियों का भी सामना करना पड़ा। दरअसल विमुद्रिकरण का एक और मकसद लोगों को कैशलेस लेनदेन की ओर बढ़ावा देना भी हैं।

[3] Samajik nyay yukt arthik vikas -shakil amir khan page no.35.
[4] Ibid.
[5] Internet-jagran josh.com(Hemant singh) 28 nov.2016.

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

भारत में अब तक दो जगह 1. तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई से करीब 150 कि.मी. दूर आरोमिले शहर है, और 2. गुजरात का अकोदरा नामक गाँव हैं जहां नोटो का चलन पूरी तरह बंद हैं।[6]

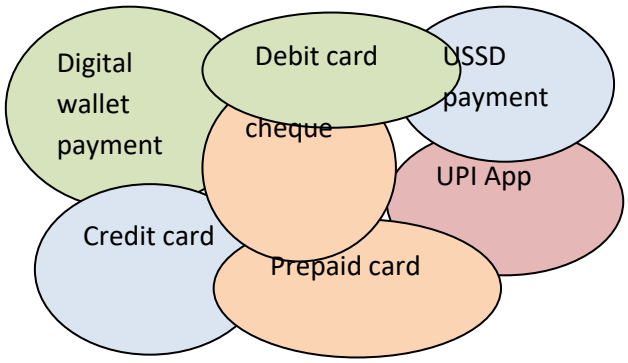


**<u>कैशलेस प्रणाली का महत्व या लाभ</u> :–**

**<u>कैशलेस प्रणाली का हमारे जीवन में कई प्रकार से लाभदायक है</u> :–**

हमारे अर्थव्यवस्था में जिस गति से चोरियां भ्रष्टाचार बढ़ रही हैं, उस दृष्टि से देखे तो हमारे समाज में कैशलेस प्रणाली का बहुत महत्व हैं। कैशलेस प्रणाली में धन का लेनदेन सीधे खाते में होता हैं, जिससे लेनदेन में पारदर्शिता रहेगी और काफी हद तक भ्रष्टाचार को कम करने में सहायता मिलेगी। चोरी का खतरा नहीं रहेगा और बैंक द्वारा जो सुविधाएँ मिलेंगी उसका लाभ मिलेगा हमें।

कैशलेस प्रणाली में हमारे द्वारा किये गए भुगतान का ब्यौरा भी सुरक्षित रहेगा, इससे आपसे तय की गयी वस्तु के लिए ज्यादा कीमत नहीं ली जा सकती हैं, यदि ली गई तो आप इसकी शिकायत भी कर सकते हैं। कर चोरी नहीं होगी जिससे सरकार के पास देश के विकास के लिए अधिक पूंजी होगी और विकास के कार्यो में तेजी आएगी। और यदि आप इमरजेंसी में हो, जैसे– हॉस्पिटल तब तो कैशलेस काफी मद्दगार साबित होगी। गरीबों के आवास, विकास, रोजगार और बहतर जीवनशैली के लिए नए बेहतर योजनाएं बन सकती।[7]

**<u>कैशलेस प्रणाली का समाज पर प्रभाव</u> :–**

**<u>विद्यार्थी वर्ग पर प्रभाव</u> :–**

कैशलेस प्रणाली विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभदायक है, क्योंकि अधिकांष छात्र–छात्राएं दूसरे शहर में हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करते हैं, और यदि उन्हें अचानक फीस या फिर अन्य कार्यो के लिए पैसों की जरूरत पड़ जाये तो उन्हें अपनी पढ़ाई और समय का नुकसान कर के घर नहीं जाना पड़ेगा। कैशलेस द्वारा वो वही

[6] Internet-jagran josh.com(Hemant singh) 28 nov.2016.
[7] Https:indiahocashless.blogspot -title(hamara cashless bharat) page no. 3.

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

पैसे प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उनके समय की बचत होगी। और अध्ययन कार्य में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नहीं होगा। इस प्रकार विद्यार्थियों के लिए वरदान हैं।

**नौकरीपेशा वर्गो पर प्रभाव :–** यदि नौकरीपेशा लोगों की बात करें तो उनके लिए भी कैशलेस प्रणाली लाभदायक होगी क्योकि, एक तो इनके पास इतना समय नहीं होता कि हर कार्य को स्वयं जा कर करें। जैसे बिल का भुगतान करना, बाजार से खरीदारी करना, अन्य जरूरत के सामान खरीदना या टिकिट बुकिंग, बच्चों की फीस का भुगतान इस तरह से कई कार्य हैं, जो ऑनलाइन भुगतान द्वारा हो सकते हैं जिससे इनके समय की बहुत अधिक बचत होगी।

**बैकिंग :–** क्षेत्र को देखे तो बैकों को भी फायदा होगा, क्योंकि क्रेडिट कार्य से लेनदेन पर 2.5 फीसदी चार्जेस लगता है जो ग्राहक से वसूला जाता हैं। ऐसे में हर में ग्राहक को करीब 2.5 रू0 चुकाने पड़ते है, तो ऐसी करोड़ों लेनदेन का मतलब हैं बैकों को करोड़ो का फायदा।[8]

**व्यवसायी वर्ग :–** व्यवसायी वर्ग को देखे तो उन्हें भी अपने व्यापार को दूर तक फैलाने में फायदा होगा जैसे आजकल लोग ऑनलाइन शौपिंग कर रहे हैं। इस तरह से व्यवसायी भी अपने सामान को दूसरे जगहों पर बेच सकते हैं, और लाभ अर्जित कर सकते है, दूसरा उनको भी जो बड़ा आर्डर रहता है, उसके भुगतान की रकम भी बड़ी रहती हैं। जिसको साथ रखने में चोरी का ड़र भी रहता है, ऐसे में कैशलेस भुगतान उनके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि **उपभोक्ता** वर्ग को देखे तो, उनके भी सब काम घर बैठे हो जाएँगें, साथ ही ऑनलाइन शौपिंग के माध्यम से वे देश–विदेश कही से भी अपने बजट के अनुसार खरीद्दारी करके ऑनलाइन भुगतान कर सकते हैं, और दूसरा कई बार हम कोई चीज खरीदते है तो छुट्टे की समस्या भी आती हैं, कैशलेस से ये समस्या भी नहीं होगी।

**श्रमिक** वर्ग की बात करें, जो रोजी मजदूरी करते है, उन लोगों के लिए कैशलेस से दिक्कत हो सकती है, क्योंकि उनको थोड़े पैसे रोज मिलते है, और उनका वे व्यय भी करते हैं, क्योंकि उनकी दिनचर्या ही इसी प्रकार की हैं।

छोटे दुकानदार को देखें या फिर रोजमर्रा की जो खरीद्दारी हैं, जो छोटी–छोटी चीज होती है उनका लोगों को नकद भुगतान करना ही सुविधा होता हैं। जो **ग्रहणीय होती हैं** उनकी बात करें तो वो घर खर्च के कुछ पैसों को बचा के रखती हैं, बिना किसी को बताए और उनको रोजमर्रा की चीजे सब्जी इत्यादि स्वयं लेनी पड़ती है जिससे उनको असुविधा हो सकती हैं।

[8] Nirbheek.com- Harish sarswat

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

परन्तु एक बात अति महत्वपूर्ण है इन सब लाभों के बावजूद समाज का बहुत बड़ा वर्ग अशिक्षित हैं, जिनको लिखना पढ़ना भी नहीं आता। उनके लिए कैशलेस प्रणाली को अपनाना मुष्किल हैं या फिर नामुमकिन हैं कहें तो गलत नहीं होगा।

**कैशलेस होने से उत्पन्न समस्याएँ :–**

कैशलेस में सबसे बड़ी समस्या षिक्षा की है, समाज का बहुत बड़ा वर्ग अशिक्षित हैं जो लिख पढ़ नहीं सकता तो तकनिकी और स्मार्ट फोन का प्रयोग तो बहुत दूर की बात हैं। और बहुत बड़ा हिस्सा अभी भी स्मार्ट फोन में 2 जी का प्रयोग करता हैं, 3 जी और 4 जी इतना महंगा है कि लोगों की पहुँच से बाहर हैं। यदि हम स्मार्टफोन को छोड़ दे USSD सेवा की बात करें तो इसको प्रयोग करने का प्रोसिजर जो हैं वो अशिक्षित लोगों के लिए मुश्किल हैं। इन्टरनेंट की स्पीड की बात करें तो भारत इस मामले में काफी पीछे हैं,[9] जहाँ एक पेज लोड होने में 5 सेकण्ड लगते हैं, वही चाइना में 2 सेकण्ड लगते हैं। यहाँ अक्सर मशीनों का हेंग होना आम बात हैं। और सबसे अहम बात हैं ऑनलाइन फ्रॉड, साइबर सुरक्षा का न होना, आये दिन लोगों के खातों से पैसे निकलने का केस और डाटा चोरी होना, बैकिंग अपराध में कई गुना वृद्धि हो रही हैं। जब सरकारी डाटा हैक कर लिया जाता हैं तो आम जनता की क्या सुरक्षा होगी।[10]

**क्रेडिट कार्ड द्वारा धोखाधडी के मामले :–**

| वर्ष | फ्रॉड % में |
|---|---|
| 2011 | 19 |
| 2012 | 07 |
| 2013 | 17 |
| 2014 | 57 |
| 2015 | 300 |
| 2016 | 409 |

स्त्रोत :– महाराष्ट्र टुडे।

तालिका में स्पष्ट हो रहा हैं कि क्रेडिट कार्ड द्वारा होने वाले फ्रॉड में लगातार वृद्धि हो रही है, जहां 2011 में 19 प्रतिशत था वहीं 2016 में 409 प्रतिशत की वृद्धि हो गयी।

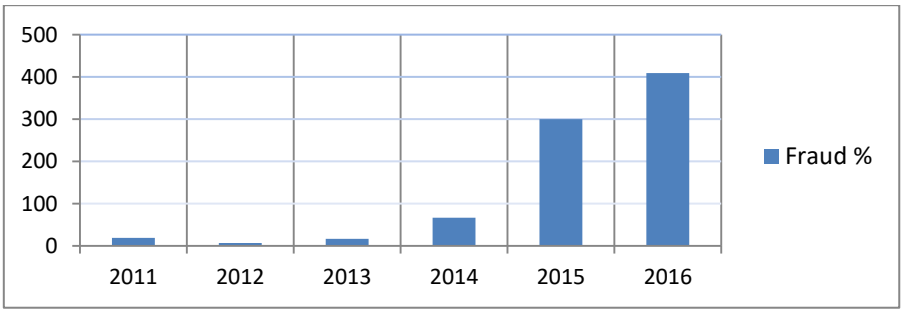


[9] Nirbheek.com- Harish sarswat
[10] Youtube news-India bole (Is India ready for cashless)

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

वहीं रेखाचित्र में भी देखिये कैसे **2014 से 2016** तक फ्रॉड में लगातार बढ़ोतरी हो रही हैं। आने वाले साल में यदि साइबर अपराध के लिए कड़ी सुरक्षा नहीं मिला तो ये फ्रॉड में इससे अधिक वृद्धि होती रहेगी।

**निष्कर्ष** :–

निष्कर्ष के रूप में हम कहे तो कैशलेस समाज बनाने की सोच हैं वह अत्यधिक प्रशंसनीय विचार तो हैं और समाज को इससे लाभ भी हैं। परन्तु हर सिक्के के दो पहलु होते है, वही कैशलेस होने के भी लाभ और हानि दोनों हैं जहां हम लाभ को स्वीकार करते है, वहीं हम इससे होने वाली समस्याओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। और दूसरी ओर देखे तो परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है, जहाँ लोगों ने बदलते समय के साथ वस्तु विनिमय प्रणाली को त्याग कर मौद्रिक प्रणाली को अपनाया, वही कैशलेस प्रणाली को भी जनता धीरे–धीरे स्वीकार करेगी। परन्तु इससे होने वाले समस्याओं को देखते हुए जनता को इसे स्वीकारना मुश्किल हैं, खासतौर पे जो अशिक्षित आबादी हैं। और जहां ऑनलाइन फ्रॉड की घटनाये आये दिन हो रही और समाज का बड़ा हिस्सा अशिक्षित हैं, तो ऐसी स्थिति में कैशलेस प्रणाली को पूरी तरह लागू करना उचित कार्य नहीं हो सकता।

**सुझाव** :–

ऑनलाइन फ्रॉड में लगातार जिस गति से वृद्धि हो रही उसे देखते हुए जब तक साइबर सुरक्षा के सक्त कानून न हो तब तक समाज को कैशलेस समाज में तब्दील करना सही नहीं हैं।

समाज का जो बड़ा वर्ग है वो अभी भी अशिक्षित हैं, जिन्हें नकद भुगतान ही सुविधापूर्ण लगती हैं, ऐसे में इन्हें प्रशिक्षण दिया भी जाए तो व्यय बहुत अधिक होगा। और इतने विशाल जनसंख्या को प्रशिक्षण देना भी आसान कार्य नहीं होगा।

समाज को पूरी तरह कैशलेस समाज में तब्दील करने पर हमारी निर्भरता पूरी तरह तकनीकी पर हो जायेगी जो कि उचित नहीं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची** :–

**पुस्तक** :–


- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त :– डॉ. वी. सी. सिन्हा, डॉ. पुष्पा सिन्हा।
- Economics - Dr.J.C.pant , DR.S.C.jain(sahitya bhawan publication )


**पत्रिका** :–


- सामाजिक न्याय युक्त आर्थिक विकास।


**इंटरनेट** :–


1. महाराष्ट्र टुडे।
2. जगन जोष मैगजिन।

3- हरीष सास्वत Nirbhik.com

4- Https://indiahocashless.blogspot.in


**********